© 2024 IJNRD | Volume 9, Issue 8 August 2024| ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन

शोध निर्देशक
डॉ. संजय जोशी

शोधार्थी
मधुमती
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर।

सार

शिक्षा का समुचित विकास वर्तमान वैश्विक दुनिया की सबसे बड़ी आश्यकता है और इस आवश्यकता से राष्ट्र विकास की पूँजी को सुदृढ भी किया जा सकता है और उन्नत भी किन्तु इसके लिए सबसे मुख्य बात यह है कि शिक्षक सक्रिय भागीदारी करे वह भी प्रसन्नता के साथ यह तभी सम्भव है जब शिक्षक अपने कार्य से सन्तुष्ट हो। अतः यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक की कर्य सन्तुष्टि कैसी है‍ इस कारण से अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई तथा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कर्य सन्तुष्टि का अध्ययनश्श किया गया। शोध का मुख्य उद्ेश्य माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन एवं माध्यमिक शिक्षकों की कर्य सन्तुष्टि का उनके स्वतंत्र चर (लिंग भेद) के संदर्भ में अध्ययन करना रहा। अनुसंधान कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्षतः माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कुुल कर्य सन्तुष्टि एवं समस्त आयामों कर्य की प्रवृत्ति , कर्य की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति तथा संस्था की प्रवृत्ति का मान औसत से अधिक पाया गया। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कर्य सन्तुष्टि एवं आयामों पर शिक्षक लिंग भेद का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

की शब्दः- कार्य सन्तुष्टि, शिक्षक, लिंग भेद।

1..1 प्रस्तावना

शिक्षा का समुचित विकास वर्तमान वैश्विक दुनिया की सबसे बड़ी आश्यकता है और इस आवश्यकता से राष्ट्र विकास की पूँजी को सुदृढ भी किया जा सकता है और उन्नत भी किन्तु इसके लिए सबसे मुख्य बात यह है कि शिक्षक सक्रिय भागीदारी करे वह भी प्रसन्नता के साथ यह तभी सम्भव है जब शिक्षक अपने कार्य या व्यवसाय से सन्तुष्ट हो। अतः यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक की कर्य सन्तुष्टि कैसी हैध्कहीं व्यक्तिगत भिन्नता ने इस सन्तुष्टि पर अतिरिक्तता तो नहीं ला दी है या वह कार्य भार से इसका सही प्रयोग न कर पा रहा हो। इसतिए शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोधपत्र में माध्यमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व का उनकी व्यावयायिक संतुष्टि से सम्बन्ध ज्ञात करने का प्रयास किया है।

1.2 शोध की आवश्यकता

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि - हमें ऐसे शिक्षक चाहिए जो चरित्रवान, मानसिक,रूप से उत्तम बुद्विमान, मूल्यवान नागरिक दे सकें, जिससे वह वह नागरिक अपने पैरों पर खड़ा हो सकें।श्श

इसके लिए अध्यापक का कार्य से सन्तुष्ट होना बहुत जरूरी है क्योंकिः-

1. आज निजी संस्थाओं में अध्यापक अध्यापन कार्यो से सन्तुष्ट नही है क्योंकि इन संस्थाओं के द्वारा उनको दिया जाने वाला वेतन अन्य देशों व राज्यों की तुलना में बहुत कम है जिससे अध्यापक अपने अध्यापन कार्यो के प्रति पूर्णतया सन्तुष्ट नही है और यह अपने कार्यो से विमुख होते जा रहे है।

2. शिक्षण संस्थानों में उचित वातावरण का नही होना क्योकि राजकीय संस्थानों में व निजी संस्थानों पर राजनैतिक प्रभाव अधिक बढ़ता जा रहा है स्थानान्तरण की स्थिति अध्यापकों के सिर पर लटकती रहती है।

3. वर्तमान युग में उच्च शिक्षा का स्तर रखने वाले व्यक्ति अपनी पद व कार्य के अनुरूप आय व सुविधाओं से सन्तुष्ट नहीं हो पाते है।

इस कारण से अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययनश्श किया जाये।

1.3 **समस्या कथन**

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन श्श

1.4 **शोध के उद्देश्य**

शोधपत्र के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का उनके स्वतंत्र चर (लिंग भेद) के संदर्भ में अध्ययन करना।

1.5 **शोध की परिकल्पनाएँ**

शोधार्थी ने प्रस्तावित शोध में माध्यमिक शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं आकांक्षा स्तर का उनकी कर्य सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन को ज्ञात करने के लिए निम्न परिकल्पनाएँ बनाई गई है।

1. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि औसत स्तर की है।

2.. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का लिंग भेद (महिला अध्यापिकाओं एवं पुरूष अध्यापक) के सन्दर्भ में सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता हैं।

1.6 शोध में प्रयुक्त शब्दावली

1.ण कार्य सन्तुष्टि -कर्य सन्तुष्टि व्यक्ति विशेष की उस मनोवृत्ति को प्रस्तुत करती है जो किसी कार्य विशेष के सम्पादन के फलस्वरूप अभिव्यक्त होती है और प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कार्य के परिणाम को प्रभावित करती है।

यहाँ कार्य सन्तुष्टि से तात्पर्य- कार्य करने वाले व्यक्ति की सतुष्टि से होता है। कार्य सन्तुष्टि एक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि का स्त्रोत होती है। जिसका कार्य करने वाले व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है।श्श

मास्लॉव (1954द्ध के अनुसार- आधारभूत मानवीय आवश्यकताओं में व्यक्ति की छः माध्यमिक ाएँ होती है उनमें मानसिक आवश्यकता का आधार तैयार करती है। मानसिक आवश्यकता सभी आवयकताओं से महत्वपूर्ण है जब वह मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त कर लेता है तो वह अन्य आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने की कोशिश करता है जो निम्न क्रम में हो सकती है जैसेः- सुरक्षा, प्यार और रूप की। इस प्रकार सन्तुष्टि का परिणाम इस प्रकार की आवश्यकताओं को प्राप्त करना होता है।

लिंगभेद- राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

1.7 शोध में प्रयुक्त चर

आक्षित चर -कार्य सन्तुष्टि।

स्वतंत्र चर - लिंग भेद ।

1.8 शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

समयाभाव व धनाभाव एवं आय सीमित साधनो के कारण शोध को परिसीमित किया गया है।

1. शोध अध्ययन हेतु केवल अजमेर जिले के महिला व पुरूष अध्यापकों को लिया गया।

2. यह विद्यालयों में कार्यरत 400 शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया।

3. इस अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का ही अध्ययन किया गया।

1.9 शोध विधि- प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

1.10 **न्यादर्श** - किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह संभव नही है कि पूरी जनसंख्या के समग्र व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सके इसीलिए जनसंख्या में से कुछ ऐसी इकाईयों का चयन कर लेते है जो कि समग्र का प्रतिनिधित्व करें और जिन पर किए गए अध्ययन के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जा सकें।

न्यादर्श- शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में अजमेर जिले के विद्यालयों में कार्यरत 400 महिला व पुरूष अध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

1॰11 **शोध में प्रयुक्त उपकरण**

प्रस्तुत शोध कार्य में दो मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया गया।

1. डा. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरण अध्यापक कृत्य सन्तोष प्रश्नावली ।

1.12 **साख्यिकी विधियाँ**

इस शोध कार्य में मध्यमान, मानक विचलन व टी टेस्ट का उपयोग किया गया है।

1.13 वर्तमान अध्ययन के शोध निष्कर्ष

कार्य समाप्ति के पश्चात परिणाम अथवा निष्कर्ष निकाला जाता है एवं उसके गुण एवं दोषों का पता लगाया जाता है। वर्तमान शोध कार्य के प्रभाव को जानने के लिए निष्कर्षो का वर्णन किया गया है -

1.13.2 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कर्य सन्तुष्टि का अध्ययन

1.13.2.1 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का विश्लेषण:-

- माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कुल कार्यसंतुष्टि एवं समस्त आयामों कार्य की प्रवृत्ति,कार्य की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति तथा संस्था की प्रवृत्ति का मान औसत से अधिक हैं।
- परिकल्पना संख्या- 1 अचयनित की जाती है। जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कार्यसंतुष्टि एवं समस्त आयामों पर प्राप्तांकों का मध्यमान औसत स्तर का है।

1.3.2.2 माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि पर शिक्षक विद्यालय प्रबन्धन (निजी विद्यालय एवं राजकीय विद्यालय) के प्रभाव का विश्लेषणः-

- महिला शिक्षिकाओं की कार्यसंतुष्टि एवं उसके समस्त आयामों यथा कार्य की प्रवृत्ति ,कार्य की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति एवं संस्था की प्रवृत्ति का मध्यमान पुरुष शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि के मध्यमान से अधिक है।
- माध्यमिक विद्यालयों के कुल कार्यसंतुष्टि एवं विभिन्न आयामों यथाः कार्य की प्रवृत्ति, कार्य की परिस्थिति, अधिकार की प्रवृत्ति एवं संस्था की प्रवृत्ति के प्राप्तांकों पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
- परिकल्पना संख्या- 2 चयनित की जाती है जिसके अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि एवं आयामों पर शिक्षक लिंग भेद का सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आचार्य पल्लवी (2015) इफेक्ट्स ऑफ स्कूल्स, सेक्स एण्ड पर्सनल्टी ऑन जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ हायर सैकण्डरी स्कूल टीचर्स ऑफ एम.पी. निमार एज्यूकेशन रिव्यू इंटरनेशनल. 1 ;1) 1.4.
- ओपडेनक्केर एण्ड डेम (2006) टीचर केरेक्टेरेस्टिक्स एण्ड टिचींग स्टाइल्स एज इफेक्टिव फैक्टर्स ऑाफ क्लासरूम प्रेक्टिस. टीचर एण्ड टीचर एजुकेशनश्श्ण 22 ;1) 1.21.
- बरोदास सुभद्रा एवं पंडा भूषण भिभूति (2014) रिलेशनशिप बिट्विन मेंटल हेल्थ एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन अमोंग प्राइमरी स्कूल टीचर्स. अभिनव नेशनल मंथली रिफ्रीड जर्नल ऑफ रिसर्च इन कोमर्स एण्ड मैनेजमेन्ट. 3 ;8) 15.25.
- बाबु, डी. राम. (2014) आन्ध्रप्रदेश के तेलांगना क्षेत्र में शिक्षक प्रशिक्षुओं में मानसिक स्वास्थ्य. जर्नल ऑफ कम्प्यूनिटी गाइडेंस एण्ड रिसर्च.31 ;1)57.60.
- बसु, सराह (2014) माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत षिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन. जीसीटीइ जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एक्सटेंषन इन एजुकेषन. 9;1) 99.
- बिड़ीयानी, आई. एम. (2015) ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ हायर सैकण्डरी स्कूल टीचर्स. रिसर्च इन्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी. रिसर्च जर्नल (त्भ्प्डत्श्र) 2 ;4)1.4.
- बघेला, एच.एस. (2005) शैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा .जयपुरः राजस्थान प्रकाशन .
- दीक्षित, मोहित (2013) सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पंचायती राज में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन. विद्या शोध. ए. बिलगुल एवं बेनुअल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड स्लाइड् ह्यूमनिटीज. 1 ;1) 1.6.
- इकेह, पी.यू. एवं ओलेडो, ओ.टी. (2011) इमोशनल इन्टेलीजेन्सी एण्ड लीडरशिप एक्सेस ऑफ सैकण्डरी स्कूल रिवर्स स्टेट. नाइजीरिया. इन्टरनेशनल मल्टीडिसिप्लनरी. 5 ;5) 382.393.
- इस्माइल अबेसनजीद अबोलफजल फराहनी, नरवेल आजम (2013) द रिलेशन बिटविन इमोशनल इन्टेलीजेन्सी एण्ड जॉब स्ट्रेस इन टीचर्स ऑफ फिजिकल एज्यूकेशन एण्ड नॉन फिजिकल एज्युकेशन. एडवांस इन एनार्वनमेंटल बाएलॉजी. 1;8) 1386. 1394.
- गोस्वामी (2003) सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षार्थी अध्यापकों पीएच.डी. शिक्षा. वनस्थली विद्यापीठ का सम्प्रत्ययात्मक विकास एवं स्व-विकास पर प्रभाव.
- गलगोत्रा, मोहन (2013) मेन्टल हेल्थ ऑफ हाई स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू देयर सेक्स एण्ड जॉब सेटिस्फेक्शन. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमिनिटी एण्ड सोशल साइंस इन्विन्शन. 2 ;1) 20.23.
- जोशी, सुरेश के जे. एवं वी. पी. (2008) शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि और दबाव के सम्बन्ध में अध्ययन. जर्नल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च.नील कमल पब्लिकेशन. 57.61.
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2007) . शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठः आर लाल बुक डिपो
- कामांची, वी. सांेरीच आर. एवं वेनगाईद्रावेन (2015) ए स्टडी ऑफ इमोशनल इन्टेलीजेन्सी एण्ड लीडरशिप स्टाइल्स ऑफ सैकण्डरी स्कूल टीचर्स. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लनरी रिसर्च एण्ड डवलपमेन्ट. 2 ;7) 401.4031.